International Journal of Information Movement Vol.2 Issue XI March 2018)
IFSIJ Impact Factor : 1.575 Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online)
Pages 176-182

माध्यमिक विद्यालय स्तर पर दिव्यांग बालकों की अध्ययन आदतों,सृजनात्मकता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. भाबाग्राही प्रधान
शोध निर्देशक (शिक्षा विभाग),
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय),
लाडनू (नागौर) राज0

सुरेन्द्र कुमार
शोधार्थी (शिक्षा विभाग),
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय),
लाडनू (नागौर) राज0

1.0 प्रस्तावना :- कुछ बालक सामान्य बालकों से शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक आदि रुपों में अलग होते है ये विशिष्ट बालक कहलाते है। ये सामान्य बालकों की तरह सामान्य शिक्षा व्यवस्था में समायोजित नही हो पाते है। शारीरिक रुप से कुछ कमी वाले व्यक्तियों में विशेष क्षमताएँ होने और सरकार द्वारा ऐसे लोगों के लिए विकलांग की बजाय **'दिव्यांग'** शब्द का प्रयोग सुझाया है। 'मन की बात' कार्यक्रम में अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि परमात्मा ने जिसको शरीर में कोई कमी दी है, कोई क्षति दी है, एक आध अंग काम नही कर रहा है, हम उसे विकलांग कहते है और विकलांग के रुप में जानते है। लेकिन उनके परिचय में आते है तो पता चलता है कि हमें अपनी ऑखों से उनमें एक कमी दिखती है, लेकिन ईश्वर ने उनकों कोई अतिरिक्त ताकत दी होती है, उन्होनें कहा, फिर मेरे मन में विचार आया कि ऑखों से तो हमें लगता है कि शायद वो विकलांग है, लेकिन अनुभव से लगता है कि उसके पास कोई अतिरिक्त शक्ति है और तब जाकर क्रे मेरे मन में विचार आया क्यों न हम हमारे देश में विकलांग की जगह पर दिव्यांग शब्द का उपयोग करें मोदी ने कहा कि हमने सुगम्य भारत अभियान की शुरुआत की है। इसके तहत हम भौतिक और आभासी दोनों तरह की आधारभूत संरचना में सुधार करके उन्हें **दिव्यांग** लोगों के लिए सुगम्य बनायेगें।

दिव्यांगव्स्था में अध्ययन आदतों,सृजनात्मकता एवं समायोजन का विशेष महत्व इसलिए भी है क्योंकि औद्योगिकृत समाज सहयोग एवं पारस्परिक संबंधों से अधिक अध्ययन आदतों,सृजनशीलता एवं समायोजन पर अधिक बल देता है। बचपन से ही बालक की आदतों के संबंध में परखा जाता है। समकालिक समाज में अन्य व्यक्त्वि के समक्ष अपनी वैयक्तिक पहचान और छवि बनाने के लिए दो बाते प्रमुख है पहली उसके द्वारा ग्रहण की गई शिक्षा तथा दूसरी उसके द्वारा प्राप्त की गई व्यवसायिक प्रस्थिति यह दोनों ही उसकी आदत के सूचक है।

वर्तमान समाज में शिक्षा की प्रकृति तथा कार्य में परिवर्तन बहुत तीव्र गति से हो रहे है।वर्तमान समय में सभी समाजों में दिव्यांग बालकों की शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है। क्योंकि तेजी से बदल रहे व्यवसायिक क्षेत्र में सामान्य पाठ्यचर्या के क्षेत्रों को पीछे छोड़ दिया है।

International Journal of Information Movement Vol.2 Issue XI March 2018)
IFSIJ Impact Factor : 1.575 Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 176-182

वर्तमान समय में समाज के दिव्यांग बालकों की शिक्षा का सिलसिला जारी है, जिससे वे अध्ययन आदतों,सृजनशीलता व समायोजन ये तीनों व्यक्ति के आरम्भ से लेकर आजीवन चलते रहते है। श्रम एवं व्यवसायिक योग्यता व्यक्ति के मूल्यों,आत्म सम्मान तथा विश्लेषण में सहायक होते है।

2.0 शोध सम्बंधित साहित्य का अध्ययन :– संबंधित साहित्य का अध्ययन अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में अनुसंधानकर्ता की अस्वीकृत अमान्य विषयों एवं अध्ययन निरर्थक प्रयासों तथा पुनरावृति से रक्षा करता है। जहॉ तक ओर साहित्य का सिंहावलोकन अनुसंधान कर्ता में समस्या तक विषय के प्रति महत्ती विवेक शक्ति विकसित करती है, वही यह तुलनात्मक प्रदत भी प्रदान करता है जिनके आधार पर अनुसंधानकर्ता अपने निष्कर्षों की सार्थकता का मूल्याकंन तथा व्याख्या करता है।

3.0 समस्या का औचित्य :– शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य सीकर जिले में करने का विचार इसलिए किया गया क्योंकि यह वर्तमान में शिक्षा नगरी है। यहॉ राज्य के विभिन्न जिलों से विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते है। सीकर जिले के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य बालकों एवं दिव्यांग बालकों की अध्ययन, आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन में क्या अन्तर पाया जाता है। माध्यमिक स्तर के कक्षा 10 के दिव्यांग बालकों की अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन को ज्ञात करने हेतु शोधकर्ता के द्वारा प्रस्तुत शोधकार्य माध्यमिक स्तर की कक्षा नवमी एवं दसवीं का चयन किया गया है।

अध्ययन आदतों,सृजनात्मकता एवं समायोजन से संबंधित पृथक पृथक अनेकों अनुसंधान कार्य किये जा चुके है। परन्तु यह सभी चर एक साथ दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को किस प्रकार प्रभावित करते है। इस संबंध में किये गये अध्ययनों का अभाव है। अतः दिव्यांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन का अध्ययन उनकी अध्ययन आदतों के संदर्भ में करने की आवश्यकता को बल मिला है।

किसी भी कार्य को करने से पहले उसका औचित्य ध्यान में रखना अंत्यन्त आवश्यक है। कार्य व कारण एक दूसरे के पूरक होते है। शैक्षिक क्षैत्र में जब भी कोई अनुसंधान कार्य किया जाता है। तो उस अध्ययन की उपादेयता,महत्व,प्रकृति आदि का औचित्य स्पष्ट करना इसलिए आवश्यक होता है कि हम इसके द्वारा यह सिद्ध कर सके इस अनुसंधान के परिणाम व निष्कर्ष शैक्षिक जगत् को किस प्रकार प्रभावित करेंगें तथ इसके अतिरिक्त यह समस्या शैक्षिक समाज की उपादेयता सिद्ध करने में भी सहायक होती है।

प्रस्तुत अध्ययन इस सैद्धान्तिक अवधारणा पर आधारित है कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों,सृजनात्मकता एवं समायोजन का उनपर निश्चित रुप से सार्थक प्रभाव पड़ता है। तथा यह उनके भवि य को निर्धारित करनें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है दिव्यांगवस्थसा मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण दुःखद अवस्था है। इस स्तर पर विद्यार्थी विभिन्न विषय लेकर शैक्षिक एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में प्रवेश एवं प्रगति का आधार सृजनात्मकता अध्ययन आदतों तथा समायोजन का पता लगाकर उसका संबंध ज्ञात करने हेतु इस विषय का चयन किया गया है। अतः शोधकर्त्ता के संदर्भ में अध्ययन आदतों,सृजनात्मकता एवं समायोजन का अध्ययन करना।

4.0 शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का परिभाषिकरण :–

1. **दिव्यांग** :– किसी व्यक्ति के लिए कोई गतिविधि को करने के सामान्य तरीके या क्षमता से कम हो, यह आंकलन प्रायः व्यक्ति के अपने स्तर से ही किया जाता है।